चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	13.03.25	2	3-5

The Tribune

VC highlights importance of organic farming at 2-day seed spices seminar

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MARCH 12

A two-day seminar on "Seed Spices: Challenges and Opportunities" was recently inaugurated at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU).

The seminar was organised by the Department of Vegetable Science.

Vice-Chancellor BR Kamboj was the chief guest at the event. The seminar was attended by researchers and officers of the Horticulture Department, farmers, and scientists from the Krishi Vigyan Kendras.

In his address, Kamboj emphasised the need to develop high-quality vegetable varieties to ensure better public health.

He highlighted the importance of organic farming, drip irrigation and pest management, urging scientists to work more efficiently in these areas.

Along with increasing production, he stressed the need to maintain seed quality to prevent any adverse health effects. The event was moderated by Dr Vijaypal Panghal, a senior scientist of the department.

The VC called for the promotion of natural farming among farmers.

He encouraged collaboration to tackle challenges such as climate change, and emphasised adopting modern agricultural practices to boost farmers' incomes.

Training farmers and producing high-quality, disease-free plants could enhance vegetable production, he added. He stressed the importance of processing vegetables post-harvest to make vegetable farming more profitable.

He urged farmers to form groups and work collectively under the farmer-producer organisation (FPO) model, and directed officials to provide training on vegetable and spice farming techniques. During a field visit, Kamboj inspected crops such as garlic, fennel, onions and coriander.

Research Director Dr Rajbir Garg said, by shifting from traditional crops to spice and vegetable farming, farmers could significantly improve their financial condition.

He advised farmers to use high-quality seeds and advanced techniques to enhance production.

Dr SK Tehlan, Head, Department of Vegetable Science, welcomed all attendees and provided insights into departmental activities.

The seminar also witnessed the participation of officers and staff from the Horticulture Department (Hisar).

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University VC visits a farm in Hisar.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	13.03.25	4	2-5

दैनिक भास्कर

खरीफ फसल • देसी कपास की बिजाई के लिए एचडी-432, संकर एएएच-1 अपनाएं

रेतीली मिट्टी में मार्च के दूसरे पखवाड़े से अप्रैल के पहले सप्ताह तक करें कपास की बिजाई

यशपाल सिंह | हिसार

हरियाणा के भिवानी, महेंद्रगढ़ और सिरसा जिलों के ऐसे क्षेत्र जहां रेतीली मिट्टी व रेतीले टिब्बे बनने की संभावना है, वहां कपास की बिजाई मार्च महीने के दूसरे पखवाड़े से अप्रैल के पहले सप्ताह तक कर दें। केवल उन्नत किस्में ही बोएं। बीटी कपास की बिजाई अप्रैल माह से मई के आखरी सप्ताह तक करें। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि देसी कपास की बिजाई के लिए एचडी-432, संकर किस्म एएएच-1 व अनुमोदित की गई बीटी संकर किस्में ही लगाएं।

कपास की बिजाई बैड पर भी की जा सकती है व रेतीली भूमि में कपास की बिजाई ड्रिप द्वारा भी की जा सकती है। कपास की बिजाई अगर संभव हो तो पूर्व से पश्चिम की तरफ की जाए तो अन्य दिशाओं में बीजी गई कपास के मुकाबले अधिक पैदावार होती है।

पांच किग्रा बीज प्रति एकड़ डालें, कतार से कतार की दूरी 67.5 सेमी रखें

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बीज का उपचार करें। देसी कपास के लिए पांच किलोग्राम बीज प्रति एकड़ डालें। ड्रिल द्वारा बीजने के लिए यदि रोएं उतरा बीज न मिले तो छह किग्रा. प्रति एकड़ रोएंदार साधारण बीज को पहले बारीक मिट्टी, गोबर या राख में रगड़ लें। इससे ड्रिल से बीज एकसार निकलें। बीटी कपास की बिजाई के लिए कतार से कतार की दूरी 67.5 सेमी, पौधे से पौधे की दूरी 60 सेमी या कतार से कतार की दूरी 100 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखें। देसी कपास में 22 केजी प्रति एकड़ यूरिया 45 दिन बाद डालें। 22 किग्रा. प्रति एकड़ यूरिया खाद 75 दिन बाद डालें। हाईब्रिड कपास में बिजाई के समय 50 किग्रा. यूरिया, 150 केजी सिंगल सुपर फास्फेट, 40 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश व 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट ड्रिल करें। इसके बाद 50 किलोग्राम यूरिया बिजाई के 45 दिन बाद व 50 किलोग्राम यूरिया बिजाई के 75 दिन बाद डालें।

कपास की फसल का फाइल चित्र।

अच्छे फुटाव के लिए 3-4 जुताइयां करें

कपास से बढ़िया फुटाव को खेत की तैयारी सही से करें। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। जरूरतनुसार 3-4 जुताइयां कर खेत को अच्छे से तैयार करें। कपास की बिजाई के समय खेत में बत्तर का होना जरूरी है। इसके लिए खेत में अच्छा पलेवा करें। गीले बत्तर में दो जुताइयां करके सुहागा लगाएं व खेत को एकसार कर लें।

दीमक वाले एरिया में बीजोपचार के बाद करें बिजाई

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने बताया कि बिजाई के बाद स्टॉम्प 30 पैंडीमिथालीन का 2 लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से 250-300 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से सांठी, सांवक खरपतवारों पर नियंत्रण हो जाता है। छिड़काव के समय खेत में नमी होनी चाहिए। दीमक की समस्या पर 10 मिली. क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी. व 10 मिली पानी को मिलाकर एक केजी बीज का इससे उपचार कर बिजाई करें। बिना रोएं उतारे बीज को बोने के काम में लें तो बुवाई से पहले एल्युमिनियम फास्फाइड की 3 ग्राम की टिकिया से प्रति घनमीटर स्थान के हिसाब से 48-72 घंटे तक धूम्रित करें।